संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

सोमनाथ
अनंत ऊर्जा का अनुभव

एक हजार वर्षों की अडिग आस्था और पुनरोत्थान

सोमनाथ
शाश्वत तीर्थ

सोमनाथ, भारत के पश्चिमी तट पर प्रभास पाटन में स्थित, भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम के रूप में पूजित है।

सदियों के दौरान इस तीर्थ ने अनेक आक्रमणों और विनाश का सामना किया, किंतु हर बार इसका पुनर्निर्माण हुआ। इस प्रकार यह भारत की आध्यात्मिक चेतना और सांस्कृतिक निरंतरता का एक सशक्त प्रतीक बनकर उभरा है।

यह एक पवित्र सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करता है, जो भक्ति और सामूहिक स्मृति से सतत पोषित रहा है। तीर्थयात्रा और स्मरण के केंद्र के रूप में, यह उस अटूट साहस, दृढ़ता और आस्था का प्रतीक है, जिसने इसकी विरासत को पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित रखा है।

श्री त्रिवेणी संगम घाट

पंच पांडव गुफा, सोमनाथ

प्रभास पाटन

युगों के प्रवाह में तीर्थ क्षेत्र

प्रभास पाटन, गुजरात के दक्षिण-पश्चिमी तट पर स्थित, श्री सोमनाथ महादेव के आदि ज्योतिर्लिंग का पावन धाम है। यह तटीय मंदिर त्रिवेणी संगम के समीप भव्य रूप से स्थित है, जहाँ पवित्र नदियाँ—कपिला, हिरण्या और सरस्वती—अरब सागर में मिलती हैं।

यह संगम मोक्ष, अर्थात् परम मुक्ति, का प्रतीक माना जाता है।यह क्षेत्र, जिसे लोकप्रिय रूप से प्रभास क्षेत्र कहा जाता है, प्राचीन काल से ही एक प्रमुख आध्यात्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विख्यात रहा है।

वैदिक विरासत

यह भूमि वैदिक ऋषियों—जैसे वैशंपायन और याज्ञवल्क्य—से संबंधित मानी जाती है, जिन्होंने यहाँ पवित्र ग्रंथों की रचना की।

ऐतिहासिक मंदिर

यहाँ प्राचीन सूर्य मंदिर, शिव मंदिर तथा जैन मंदिर विकसित हुए, जो विभिन्न धार्मिक परंपराओं में इसकी पवित्रता और महत्व को दर्शाते हैं।

महाकाव्य और पुराण

यह क्षेत्र महाभारत काल में पांडवों के वनवास के दौरान उनका आश्रय स्थल रहा। साथ ही, भालका तीर्थ वह पावन स्थल है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण की अंतिम लीला (प्रयाण) से संबंधित मान्यता जुड़ी हुई है।

मोक्ष स्थल

क्षणमात्रं शिवक्षेत्रे पो वसेद्धाचतत्परः ।
स सर्वपापनिर्मुक्ती यायन्ते शङ्करालयम् ॥ १२ ॥

स्कन्द पुराण (प्रभास खंड) से श्लोक

यह कहा गया है कि जो कोई भी सच्ची भक्ति के साथ शिव-क्षेत्र में एक क्षण के लिए भी निवास करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर भगवान शंकर के धाम को प्राप्त करता है।

समृद्धि का धाम

अत्र यत् क्रियते कर्म स्वल्पं वा बहुलं तथा ।
प्रभावार्जर्टस्तचत्कोटिकोटिगुणं भवेत् ॥ १३ ॥

स्कन्द पुराण (प्रभास खंड) से भावार्थ

ऐसा कहा गया है कि यहाँ किया गया कोई भी कर्म—चाहे वह छोटा हो या बड़ा—इस पावन भूमि के प्रभाव से करोड़ों-करोड़ गुना फल प्रदान करता है।

प्राचीन सभ्यता

सोमनाथ: एक जीवंत संस्कृति

सोमनाथ पाटन, सरस्वती, हिरण और कपिला नदियों के संगम पर स्थित, प्राचीन सरस्वती सभ्यता से जुड़ा हुआ माना जाता है। यह क्षेत्र ऋग्वैदिक काल और हड़प्पा सभ्यता के बीच एक सेतु के रूप में उभरता है तथा भारतीय संस्कृति के प्रारंभिक केंद्रों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है।

कालखंड अनुसार विकास

- **प्राक्-प्रभास (3000–2800 ईसा पूर्व)**
  प्रारंभिक ग्रामों का विकास हुआ, जहाँ मिट्टी के बर्तन, चाल्सेडोनी (पत्थर) के औज़ार और साधारण आवास मिलते हैं।
- **प्रारंभिक प्रभास (2200–1700 ईसा पूर्व)**
  इस काल में हड़प्पा सभ्यता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, विशेषकर मिट्टी के बर्तनों और उपकरणों में।
- **उत्तर प्रभास (1700–1400 ईसा पूर्व)**
  नगरात्मक विशेषताएँ विकसित होने लगीं, जिनमें लस्ट्रस रेड वेयर (चमकीले लाल बर्तन) और कांस्य वस्तुएँ प्रमुख हैं।
- **मौर्य काल (400 ईसा पूर्व–100 ईस्वी)**
  यह क्षेत्र एक सुदृढ़ बस्ती के रूप में विकसित हुआ, जिसके व्यापारिक संबंध भूमध्यसागर और मध्य-पूर्व तक फैले हुए थे।
- **गुप्त–क्षत्रप काल (100–600 ईस्वी)**
  इस काल में समृद्धि अपने चरम पर थी, जिसका प्रमाण सिक्कों, रोमन ऐंफोरा (भंडारण पात्र) और टेराकोटा कला में मिलता है।

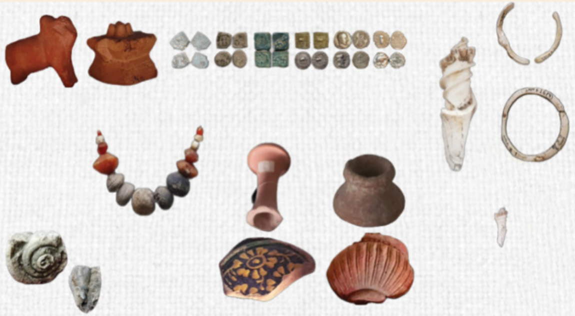

पवित्र ग्रंथों में सोमनाथ

अनेक हिंदू ग्रंथों में प्रमुख शिव तीर्थों की सूची तथा उनके दर्शन की विधि का वर्णन मिलता है। इनमें विशेष रूप से माहात्म्य परंपरा के ग्रंथ प्रसिद्ध हैं, जो तीर्थों की महिमा का विस्तार से वर्णन करते हैं।

- इनमें, शिव पुराण के ज्ञानसंहिता (अध्याय 13) में वर्णित ज्योतिर्लिंगों की सूची में सोमनाथ मंदिर को प्रथम स्थान प्राप्त है। यह ज्योतिर्लिंगों की सूची का सबसे प्राचीन ज्ञात उल्लेख भी माना जाता है।

- अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों में स्कन्द पुराण के अंतर्गत वाराणसी माहात्म्य, तथा शतरुद्र संहिता और कोठिरुद्र संहिता शामिल हैं।

- इन सभी ग्रंथों में या तो सोमनाथ मंदिर का सीधे बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम के रूप में उल्लेख किया गया है, या फिर सौराष्ट्र में स्थित "सोमेश्वर" को सर्वोच्च तीर्थ बताया गया है—जो इन ग्रंथों में सोमनाथ का ही पर्यायवाची नाम है।

- इस प्रकार, सोमनाथ न केवल एक ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल है, बल्कि शास्त्रीय परंपरा में भी सर्वोच्च स्थान प्राप्त तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित है।

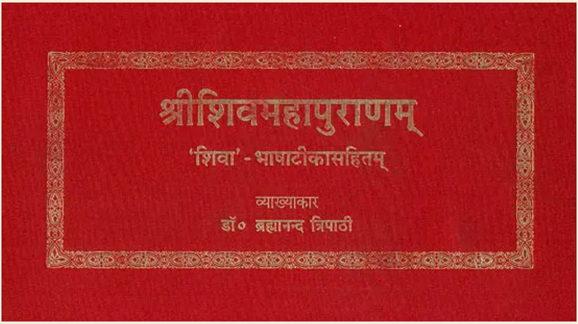

सोम-चन्द्र की कथा

चंद्रदेव, जिन्होंने दक्ष प्रजापति की 27 पुत्रियों से विवाह किया था, अपने हृदय से केवल रोहिणी के प्रति विशेष अनुरक्त हो गए और अन्य पत्नियों की उपेक्षा करने लगे। उनकी पीड़ा जब दक्ष तक पहुँची, तो उनके क्रोध ने एक शक्तिशाली शाप का रूप ले लिया, जिससे चंद्रमा का तेज क्षीण होने लगा और वह धीरे-धीरे क्षय की ओर अग्रसर हुआ।

प्रायश्चित और मुक्ति की खोज में चंद्रदेव प्रभास पाटन पहुँचे और वहाँ भगवान शिव की कठोर तपस्या की। उनकी गहन भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने शाप को आंशिक रूप से शिथिल किया—जिससे चंद्रमा का क्षय तो होता है, परंतु वह पुनः बढ़ता भी है।

कृतज्ञता स्वरूप, चंद्रदेव ने वहीं एक ज्योतिर्लिंग की स्थापना की, जिससे पवित्र सोमनाथ मंदिर का उद्भव हुआ। यह कथा आज भी पुनर्जन्म, नवजीवन और दिव्य अनुग्रह का शाश्वत प्रतीक मानी जाती है।

भगवान शिव से जुड़े प्रतीक और उनके अर्थ

अर्धचन्द्र

मन की शांति, समय की लय और पूर्ण सजगता के साथ आंतरिक उल्लास का प्रतीक

जटा

तप, संयम और अपार आध्यात्मिक ऊर्जा को धारण करने की क्षमता का प्रतीक

गंगा

पवित्रता, ज्ञान और करुणा की धारा जो जीवन को शुद्ध करती है

त्रिनेत्र

माया, द्वैत और इंद्रिय की सीमाओं से परे जाकर सत्य को देखने वाली जागृत दृष्टि का प्रतीक

नाग

कंठ स्थित विशुद्धि चक्र के माध्यम से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विषैले प्रभावों पर नियंत्रण का प्रतीक

रुद्राक्ष

वैराग्य, आध्यात्मिक अनुशासन और मानव चेतना का ब्रह्मांड से सामंजस्य दर्शाता है

भगवान शिव से जुड़े प्रतीक और उनके अर्थ

भस्म

शरीर की क्षणभंगुरता और नश्वर पर शाश्वत की विजय का प्रतीक।

त्रिशूल

अस्तित्व की तीन शक्तियों - सृष्टि, पालन और संहार पर नियंत्रण तथा ऊर्जा के संतुलन (इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना) का संकेत।

डमरू

उस नाद का प्रतीक जिससे सृष्टि और भाषा का उद्भव होता है।

व्याघ्रचर्म

आदिम प्रवृत्तियों और वासनाओं पर विजय, तथा पशु स्वभाव पर नियंत्रण का प्रतीक

नंदी

अडिग भक्ति, धैर्य और सजग ध्यान का प्रतीक- बिना किसी इच्छा या अपेक्षा के शांत प्रतीक्षा में लीन।की लय और पूर्ण सजगता के साथ आंतरिक उल्लास का प्रतीक

शैव उपासना के सर्वाधिक पूजनीय केंद्रों में से एक

जब शैव धर्म का प्रसार भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ, तब सोमनाथ उसके सबसे पूजनीय केंद्रों में से एक के रूप में उभरा। यहाँ तपस्वी, विद्वान और श्रद्धालु एकत्रित होते रहे, जिससे यह तीर्थ आध्यात्मिक साधना और दार्शनिक चिंतन का एक सजीव केंद्र बन गया। इस प्रकार, यह मंदिर भारत के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने वाली पवित्र तीर्थ-परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया, जो देश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक एकता को प्रतिबिंबित करता है।

दिव्य संगम
हरि–हर तीर्थ

प्रभास पाटन को “हरि–हर क्षेत्र” के रूप में आदरपूर्वक जाना जाता है—एक ऐसा पवित्र स्थल जो भगवान विष्णु (हरि) और भगवान शिव (हर) की आध्यात्मिक एकता का प्रतीक है। हरि सृष्टि के संरक्षण और cosmic order का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि हर परिवर्तन और संहार के द्योतक हैं।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से, यह क्षेत्र शैव और वैष्णव—दोनों परंपराओं का संगम रहा है। यहाँ सोमनाथ मंदिर (शिव), भालका तीर्थ (भगवान कृष्ण का निर्वाण स्थल) तथा विभिन्न वैष्णव मंदिर स्थित हैं, जिसके कारण इसे हरि–हर क्षेत्र की संज्ञा प्राप्त हुई है।

यह अवधारणा केवल धार्मिक पहचान तक सीमित नहीं, बल्कि एक व्यापक संदेश भी देती है—एकता का संदेश। प्रभास पाटन की इस पावन भूमि में भक्ति समावेशी बन जाती है, जहाँ स्थिरता और गति, संरक्षण और परिवर्तन, अनुशासन और समर्पण—सभी एक साथ समाहित हो जाते हैं।

व्यापार का समृद्ध केंद्र

प्रभास पाटन स्थित सोमनाथ, प्राचीन काल से ही एक प्रमुख बंदरगाह नगर के रूप में विकसित हुआ, जो भारत की समृद्ध समुद्री विरासत को दर्शाता है।

- प्राचीन ग्रंथों में इसे पत्तन और द्रोणमुख के नामों से भी संबोधित किया गया है। नदियों के संगम और अरब सागर के तट पर स्थित होने के कारण यह व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का स्वाभाविक केंद्र बन गया।

- मौर्य और गुप्त काल में यह स्थल गुजरात के तट को पश्चिम एशिया, अफ्रीका और रोम से जोड़ता था। यहाँ आने वाले व्यापारी केवल वस्तुएँ ही नहीं, बल्कि विचार और परंपराएँ भी साथ लाते थे, जिससे यह क्षेत्र और अधिक समृद्ध हुआ। इस आदान-प्रदान के केंद्र में सोमनाथ मंदिर स्थित था, जहाँ व्यापार और भक्ति का अद्वितीय संगम दिखाई देता था।

पुरातात्त्विक साक्ष्य: इस क्षेत्र की खुदाइयों से एक जीवंत सांस्कृतिक और व्यापारिक अतीत के प्रमाण प्राप्त हुए हैं:

- **कलाकृतियाँ:** शंख आभूषण, ऐंफोरा (भंडारण पात्र), कार्नेलियन मनके और रोमन मिट्टी के बर्तन

- **लंगर:** रिंग-स्टोन लंगर, जो सक्रिय समुद्री गतिविधियों का संकेत देते हैं

- **सिक्के:** इंडो-ग्रीक, मौर्यकालीन पंच-चिह्नित तथा नहपान के रजत सिक्के, जो व्यापक व्यापारिक नेटवर्क का प्रमाण हैं

सोमनाथ के निकट प्राप्त रिंग-स्टोन लंगर

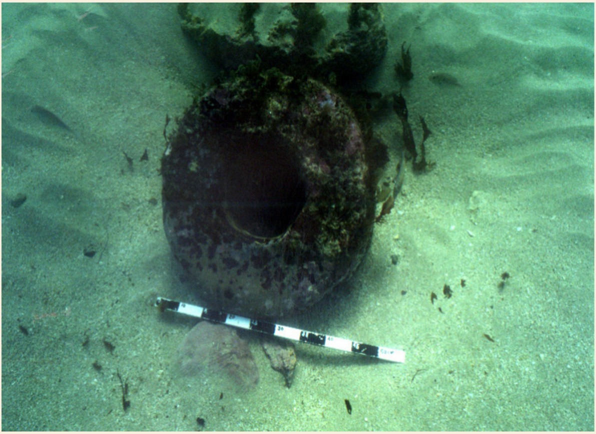

सोमनाथ
युगों के प्रवाह में: सृजन की विनाश पर विजय की गाथा

सतयुग

- मूल वैदिक काल का मंदिर स्वर्ण (सोने) से निर्मित माना जाता है।
- इसका निर्माण पुराणिक परंपराओं के अनुसार हुआ।
- इसे प्रायः सोमराज (चंद्रदेव) से संबद्ध माना जाता है।

त्रेता युग

- इस काल में मंदिर का पुनर्निर्माण रजत (चाँदी) से किया गया।
- यह स्वर्ण मंदिर के पश्चात स्थापित हुआ।
- इसे रावण से जोड़ा जाता है।

द्वापर युग

- रजत संरचना के क्षीण होने के बाद इस युग में मंदिर पुनः स्थापित हुआ।
- इसका निर्माण चंदन (सैंडलवुड) से होने का उल्लेख मिलता है।
- इसे भगवान श्रीकृष्ण से संबंधित माना जाता है।

द्वितीय मंदिर

649 ईस्वी

- इसका निर्माण मैत्रक वंश के राजाओं द्वारा किया गया।
- मंदिर का निर्माण पत्थर और ईंट से किया गया था।
- यह प्रारंभिक ऐतिहासिक पुनर्निर्माण का प्रतिनिधित्व करता है।
- इसे वल्लभी के शासकों द्वारा निर्मित पहला पुरातात्त्विक रूप से प्रमाणित मंदिर माना जाता है।

तृतीय मंदिर

800 ईस्वी

- 731–738 ईस्वी के बीच अरब सेनाओं ने सौराष्ट्र और उज्जैन क्षेत्र पर अभियान किया, परंतु उन्हें पराजित किया गया।
- नागभट्ट प्रथम ने इन आक्रमणों को विफल किया।
- इसके पश्चात नागभट्ट द्वितीय द्वारा मंदिर का पुनर्निर्माण कराया गया।
- इस मंदिर का निर्माण लाल बलुआ पत्थर (रेड सैंडस्टोन) से हुआ।
- यह मंदिर स्थापत्य कला में उन्नति और परिष्कार का संकेत देता है।

विदेशी आक्रमण का कारण

मध्यकालीन भारत में मंदिर केवल धार्मिक स्थल ही नहीं थे, बल्कि वे राजनीतिक और सांस्कृतिक महत्व के भी केंद्र थे। वे शाही सत्ता और क्षेत्रीय पहचान से जुड़े होते थे।

इसी कारण, ऐसे स्थलों पर आक्रमण या नियंत्रण स्थापित करना आक्रांताओं के लिए अपनी सत्ता प्रदर्शित करने और स्थापित प्रभाव केंद्रों को कमजोर करने का एक माध्यम बन जाता था।

सोमनाथ मंदिर भी इतिहास में अनेक बार आक्रमणों और विध्वंस का सामना करता रहा, किंतु हर बार इसका पुनर्निर्माण हुआ—जो अटूट आस्था और सामूहिक संकल्प का प्रतीक है। प्रत्येक विपत्ति के समय समाज, संरक्षक और श्रद्धालु एकजुट होकर मंदिर के पुनर्स्थापन में लगे।

यह भी कहा जाता है कि भगवान शिव को समर्पित एक प्रमुख तीर्थ होने के कारण, सोमनाथ को शासकों, व्यापारियों और तीर्थयात्रियों से निरंतर संरक्षण और समर्थन प्राप्त होता रहा। इसके अतिरिक्त, एक महत्वपूर्ण बंदरगाह के निकट स्थित होने के कारण इसकी समृद्धि भी बढ़ी।

इसी संपन्नता और प्रतिष्ठा के कारण यह महमूद ग़ज़नी जैसे आक्रमणकारियों के लिए एक आकर्षक लक्ष्य बन गया।

पहला प्रमुख आक्रमण
(1026 ईस्वी)

सोमनाथ मंदिर पर पहला प्रमुख और ऐतिहासिक रूप से दर्ज आक्रमण जनवरी 1026 ईस्वी में हुआ, जिसका नेतृत्व महमूद ग़ज़नी ने किया।

यह आक्रमण अत्यंत भीषण था। लगभग तीन दिनों तक चले इस आक्रमण में भारी हिंसा हुई, जिसमें हजारों रक्षकों ने अपने प्राणों की आहुति दी। मंदिर को ध्वस्त कर दिया गया और अपार धन-संपदा लूट ली गई।

यह घटना सोमनाथ के इतिहास में एक ऐसे दौर की शुरुआत बनी, जिसमें विनाश और पुनर्निर्माण का चक्र बार-बार दोहराया गया।

चतुर्थ मंदिर

1026-1042 ईस्वी

- 1026 ईस्वी में महमूद ग़ज़नी के आक्रमण के बाद व्यापक पुनर्स्थापन कार्य आरंभ हुआ।
- इस मंदिर का निर्माण पत्थर से किया गया।
- इसका पुनर्निर्माण भीमदेव प्रथम तथा भोज द्वारा कराया गया।
- एक अभिलेख के अनुसार, 1045 ईस्वी में सियाकल (Siyakal) प्रभास आए और स्वर्ण तुला अनुष्ठान किया, जिससे संकेत मिलता है कि मंदिर का पुनर्निर्माण लगभग 1044 ईस्वी तक पूर्ण हो चुका था।

पंचम मंदिर

1169 ईस्वी

- भाव बृहस्पति ने कुमारपाल को मंदिर के भव्य पुनर्निर्माण के लिए प्रेरित किया।
- इस मंदिर का निर्माण पत्थर और रत्नों से किया गया।
- इसने पुराने ढाँचे का स्थान लेते हुए एक भव्य मारु-गुर्जर शैली (Maru-Gurjara Architecture) के मंदिर का रूप लिया, जो अपनी उत्कृष्ट शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है।

राजा भोज
सोमनाथ का पुनर्जागरण

राजा भोज (लगभग 1010–1055 ईस्वी), मालवा के प्रतिष्ठित शासक, सोमनाथ मंदिर के 11 वीं शताब्दी के पुनर्निर्माण से ऐतिहासिक परंपराओं में जुड़े हुए हैं। यह पुनर्निर्माण प्रायः भीमदेव प्रथम (गुजरात) के साथ मिलकर किया गया माना जाता है।

राजा भोज का यह संरक्षण उस व्यापक परंपरा को दर्शाता है, जिसमें शासक मंदिरों को केवल पूजा स्थलों के रूप में ही नहीं, बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक और ज्ञान के केंद्रों के रूप में भी विकसित करते थे।

सोमनाथ के पुनर्जागरण में उनका योगदान यह भी दर्शाता है कि कैसे विभिन्न क्षेत्रों के शासक और समाज एक साथ मिलकर तीर्थ परंपरा, सांस्कृतिक एकता और आध्यात्मिक धरोहर को बनाए रखने के लिए समर्पित रहे।

AI-generated image

भीमदेव सोलंकी

पुनर्स्थापन के संरक्षक

भीमदेव सोलंकी (1022–1064 ई.) ने मध्यकालीन आक्रमणों के बाद सोमनाथ के पुनर्स्थापन और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके संरक्षण में मंदिर की संरचना, पूजा-पद्धति और धार्मिक परंपराएँ सुदृढ़ बनी रहीं, जिससे इसकी निरंतरता बनी रही।

उनका योगदान दर्शाता है कि शासक केवल निर्माणकर्ता ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं के संरक्षक भी होते हैं।

मोढेरा सूर्य मंदिर (1027 ई.), उनके संरक्षण में निर्मित, उस युग की उत्कृष्ट मारु-गुर्जर स्थापत्य शैली का उदाहरण है।

AI-generated image

रा नवघन

सोमनाथ की परंपराओं के रक्षक

रा नवघन (लगभग 11वीं शताब्दी), सौराष्ट्र के शासक, क्षेत्रीय परंपराओं में सोमनाथ के रक्षक के रूप में स्मरण किए जाते हैं।

स्थानीय रक्षा और जनसमुदाय के संगठन के माध्यम से उन्होंने पूजा-पद्धति और तीर्थयात्रा को बनाए रखने में योगदान दिया, जिससे कठिन परिस्थितियों में भी सोमनाथ की परंपरा निरंतर बनी रही।

AI-generated image

सिद्धराज जयसिंह

ज्योतिर्लिंग की महिमा का पुनरुत्थान

सिद्धराज जयसिंह (लगभग 1094–1143 ईस्वी), एक प्रमुख सोलंकी शासक, मंदिर पुनर्निर्माण तथा कला, स्थापत्य और धर्म के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध थे। उनके संरक्षण से सोमनाथ का पुनर्निर्माण सुदृढ़ हुआ, पूजा-पद्धति और पुरोहित व्यवस्था को निरंतरता मिली तथा तीर्थयात्रा का पुनर्जीवन हुआ—जिससे पश्चिम भारत में इसकी आध्यात्मिक महत्ता पुनः स्थापित हुई।

AI-generated image

प्राचीन सोमनाथ मंदिरों की कलाकृतियाँ

कालातीत कला का साक्ष्य

पुराने सोमनाथ मंदिरों के अवशेषों से प्राप्त कलाकृतियाँ प्राचीन भारतीय मंदिर वास्तुकला और मूर्तिकला की भव्यता तथा उत्कृष्टता की अद्वितीय झलक प्रस्तुत करती हैं। ये अवशेष प्रभास पाटन एवं सोमनाथ संग्रहालय में सुरक्षित हैं और मंदिर के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा सौंदर्यात्मक महत्व को समझने में अत्यंत सहायक हैं।

संरक्षण और प्रदर्शन

1950 में, नए मंदिर के निर्माण हेतु पुराने अवशेषों को सावधानीपूर्वक हटाया गया। मूर्तिकला के इन अवशेषों को संग्रहीत कर संरक्षित किया गया, जिससे विभिन्न युगों को समेटे एक समृद्ध संग्रह तैयार हुआ।

धार्मिक और दार्शनिक अभिव्यक्ति

इन शिल्पों में क्षेत्र की आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपराओं का प्रतिबिंब मिलता है। अनेक विनाश और पुनर्निर्माण के बावजूद, इनकी धार्मिक और सांस्कृतिक जड़ें अटूट बनी रहीं।

कालक्रम और ऐतिहासिक महत्व

ये कलाकृतियाँ केवल कलात्मक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। इनके माध्यम से मंदिर की संरचना, शैली और समय के साथ हुए विकास को समझा जा सकता है।

स्थापत्य अवशेषः ऐतिहासिक साक्ष्य

पुराने मंदिर के अवशेष निम्नलिखित पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं:

मंदिर शैली:

प्राचीन मंदिर की संरचना, आकार और शिल्पकला

कलात्मक प्रवृतियाँ:

10वीं से 12वीं शताब्दी की उच्च स्तरीय कला और वास्तु परंपरा

ऐतिहासिक निरंतरताः

विनाश और पुनर्निर्माण के बावजूद परंपराओं की स्थिरता

निष्कर्ष

सोमनाथ की ये कलाकृतियाँ भारतीय कला और संस्कृति की अदम्य भावना का प्रमाण हैं। ये आस्था, पुनर्निर्माण और उत्कृष्ट शिल्पकला की उस विरासत को संरक्षित करती हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

वीर हमीरजी गोहिल

सोमनाथ के रक्षक

वीर हमीरजी गोहिल, गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के लाठी गाँव के 16 वर्षीय राजपूत योद्धा प्रमुख थे, जिन्होंने 1299 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी की सेना के विरुद्ध सोमनाथ मंदिर की रक्षा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया।

उन्होंने और उनके साथियों ने 9–10 दिनों तक वीरतापूर्वक संघर्ष किया और अंततः शहीद हुए। उनका स्मारक सोमनाथ मंदिर के प्रवेश द्वार पर स्थित है, जो उनके अद्वितीय बलिदान की स्मृति को अमर करता है।

AI-generated image

कान्हड़देव
सोमनाथ प्रतिमा के उद्धारक

कान्हड़देव, 13वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जालौर के शासक, पश्चिमी भारत में दिल्ली सल्तनत के अभियानों के दौरान पवित्र स्थलों के रक्षक के रूप में क्षेत्रीय परंपराओं में स्मरण किए जाते हैं।

मध्यकालीन विवरणों के अनुसार, उनकी सेना ने उलूग़ ख़ाँ की उस सेना का सामना किया जो सोमनाथ पर आक्रमण के बाद गुजरात से लौट रही थी। इस संघर्ष में बंदियों को मुक्त कराया गया और मंदिर से संबंधित एक पवित्र प्रतिमा को पुनः प्राप्त किया गया।

वीर वेगड़ाजी भील

सोमनाथ के रक्षक

वीर वेगड़ाजी भील को क्षेत्रीय परंपराओं में सोमनाथ की रक्षा से जुड़े एक वीर भील प्रमुख के रूप में स्मरण किया जाता है। उन्होंने 14वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जफर खान की सेनाओं के विरुद्ध वीर हमीरजी गोहिल के साथ मिलकर संघर्ष किया। उनका बलिदान भारत की सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा में जनजातीय समाज के साहस और योगदान का प्रतीक है। वीर वेगड़ाजी भील आज भी वीरता, बलिदान और सोमनाथ के प्रति श्रद्धा के प्रतीक माने जाते हैं। आज सोमनाथ मंदिर के प्रवेश द्वार पर वीर वेगड़ाजी भील और वीर हमीरजी गोहिल की स्मृति में प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

सोमनाथ के अनसुने नायक

वे ब्राह्मण जिन्होंने पूजा की परंपरा जीवित रखी

कठिन समय में प्रभास पाटन के ब्राह्मणों ने निःशब्द रूप से सोमनाथ की पूजा परंपरा को जीवित बनाए रखा। जब मंदिर क्षतिग्रस्त हुआ, तब भी उन्होंने पवित्र वस्तुओं की रक्षा की और निकटवर्ती गाँवों व साधारण आश्रयों में अनुष्ठानों को जारी रखा।

कुछ पुरोहितों ने अंतिम आरती पूर्ण करने के लिए संकट में भी डटे रहे, जबकि अन्य ने सावधानीपूर्वक इन परंपराओं को अगली पीढ़ियों तक पहुँचाया। उनके समर्पण के कारण सोमनाथ में पूजा कभी वास्तव में रुकी नहीं।

छठा मंदिर

1325–1400 ईस्वी

- 1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की सेना के आक्रमण के बाद मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया।
- 1393 में गुजरात के सूबेदार ज़फ़र ख़ान ने पुनः आक्रमण कर मंदिर को नष्ट कर दिया।
- इसके बाद महिपाल प्रथम द्वारा मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया तथा उनके पुत्र खंगार ने शिवलिंग की स्थापना की।

सातवाँ मंदिर

1783 ईस्वी

- अहिल्याबाई होल्कर मंदिरों के पुनरुद्धार के लिए प्रसिद्ध थीं।
- औरंगज़ेब द्वारा 1706 में किए गए विध्वंस के बाद उन्होंने अवशेषों के पास नया मंदिर बनवाया।
- 1783 में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण कराया।
- उनके प्रयासों से सोमनाथ पुनः एक प्रमुख तीर्थस्थल के रूप में स्थापित हुआ।

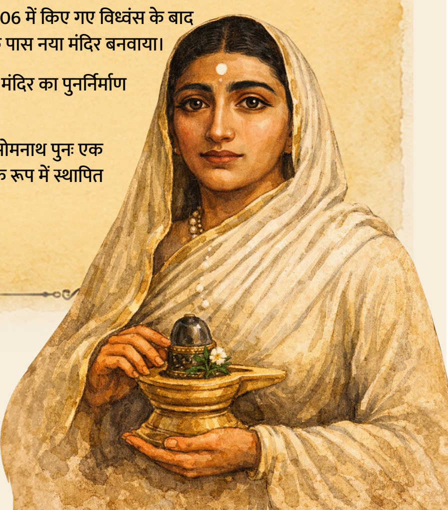

महाराणी अहल्याबाई द्वारा पुनर्स्थापित
श्री सोमनाथ महादेव मंदिर
स्थापना इस्वीसन १७८३.

जूनागढ़
सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संदर्भ

स्वतंत्रता के पश्चात रियासतों के एकीकरण के दौर में सोमनाथ के पुनर्निर्माण का निर्णय आकार लेने लगा।

काठियावाड़ क्षेत्र में हुए घटनाक्रम, विशेषकर जूनागढ़ के भारत में विलय, ने इस तीर्थ के प्रति नए सिरे से ध्यान आकर्षित करने की पृष्ठभूमि तैयार की।

15 सितम्बर 1947 को अस्थायी सरकार का गठन हुआ। यह परिप्रेक्ष्य दर्शाता है कि सोमनाथ का पुनर्स्थापन राष्ट्रीय एकीकरण की व्यापक प्रक्रिया से गहराई से जुड़ा हुआ था।

सरदार पटेल
सोमनाथ में घोषणा

सरदार पटेल ने 12 नवम्बर 1947 को जूनागढ़ का दौरा किया और क्षेत्र के भारत में विलय के बाद शीघ्र ही सोमनाथ पहुंचे।

13 नवम्बर 1947 को सोमनाथ के खंडहरों का उनका दौरा मंदिर के पुनर्निर्माण का निर्णायक क्षण बना।

इस दौरे के दौरान उनके साथ नवानगर के जाम साहब तथा एन. वी. गाडगिल भी उपस्थित थे, और इसी अवसर पर मंदिर के पुनर्निर्माण का निर्णय सार्वजनिक रूप से घोषित किया गया।

अहिल्याबाई मंदिर में एक विशाल जनसभा आयोजित की गई, जहाँ सरदार पटेल ने अपने भाषण में कहा:

"नव वर्ष के इस शुभ अवसर पर हमने यह निर्णय लिया है कि सोमनाथ का पुनर्निर्माण किया जाए। सौराष्ट्र के लोगों, आपको इसमें अपना सर्वोत्तम योगदान देना चाहिए। यह एक पवित्र कार्य है, जिसमें सभी को भाग लेना चाहिए।"

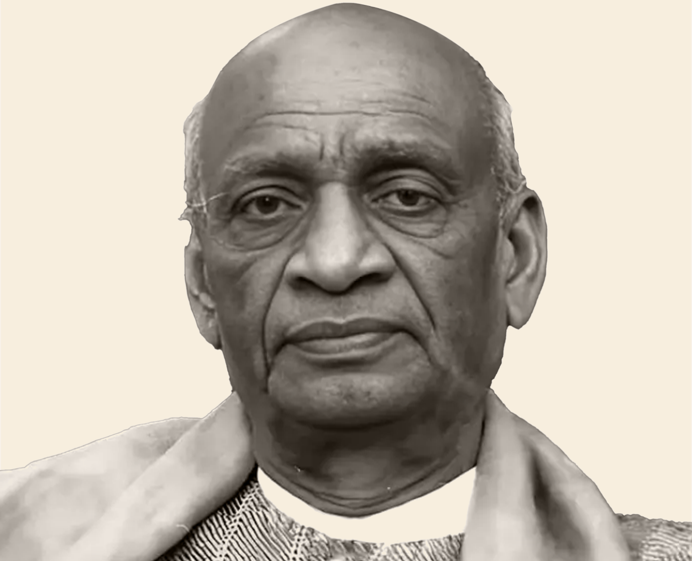

सोमनाथ पुनर्निर्माण की ऐतिहासिक यात्रा

24 अक्टूबर 1947 को पहली बार पुराने सोमनाथ मंदिर
पर तिरंगा फहराया गया

सरदार पटेल, काकासाहेब एन. वी.
गाडगिल और कप्तान गुरुदयाल सिंह

सरदार पटेल और जामसाहेब
केशोद एयरपोर्ट पर

सरदार पटेल और जामसाहेब जी खंडहर सोमनाथ मंदिर
के दर्शन करते हुए

सरदार पटेल ने अपने भाषण में लोगों को सोमनाथ मंदिर
पुनर्निर्माण के निर्णय से अवगत कराया

सरदार पटेल, जामसाहेब, गाडगिल,
मणिवेन, समदास गांधी, के.एम. मुंशी संयुक
रूप से सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए

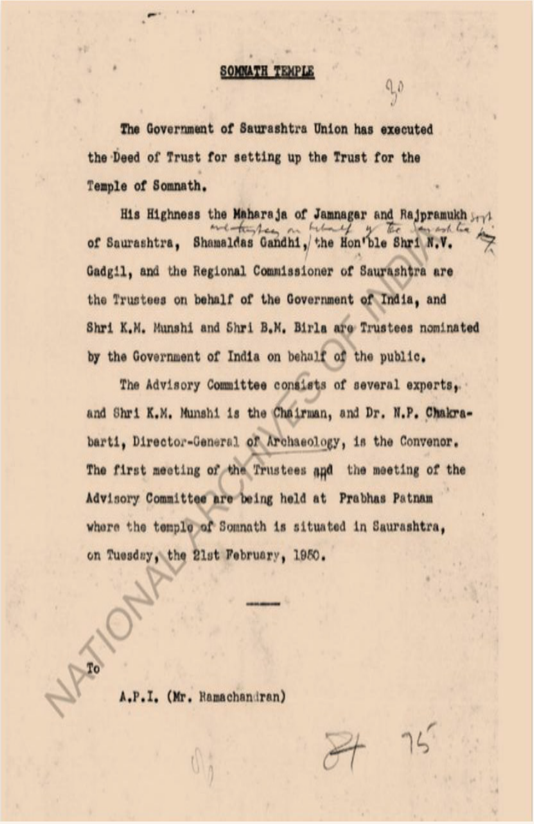

SOMNATH TEMPLE

The Government of Saurashtra Union has executed the Deed of Trust for setting up the Trust for the Temple of Somnath.

His Highness the Maharaja of Jamnagar and Rajpramukh of Saurashtra, Shamaldas Gandhi, the Hon'ble Shri N.V. Gadgil, and the Regional Commissioner of Saurashtra are the Trustees on behalf of the Government of India, and Shri K.M. Munshi and Shri B.M. Birla are Trustees nominated by the Government of India on behalf of the public.

The Advisory Committee consists of several experts, and Shri K.M. Munshi is the Chairman, and Dr. N.P. Chakrabarti, Director-General of Archaeology, is the Convenor. The first meeting of the Trustees and the meeting of the Advisory Committee are being held at Prabhas Patnam where the temple of Somnath is situated in Saurashtra, on Tuesday, the 21st February, 1950.

To

A.P.I. (Mr. Ramachandran)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

मंदिर के पुनर्निर्माण की योजना, समन्वय और पर्यवेक्षण के लिए ट्रस्ट का गठन किया गया।

- महात्मा गांधी की सलाह के अनुसार, यह कार्य जनसहभागिता और सार्वजनिक दान से संचालित हुआ।
- इस पहल का नेतृत्व सरदार पटेल और के. एम. मुंशी ने किया।
- निर्माण में पारंपरिक मंदिर वास्तुकला का पूर्ण पालन सुनिश्चित किया गया।
- यह स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक बना।

वास्तुकला

कैलास महमेरु प्रासाद हिन्दू मंदिर वास्तुकला का एक विशिष्ट रूप है, जो मुख्यतः चालुक्य (या चौलुक्य/सोलंकी) परंपरा से जुड़ा है। यह शैली पश्चिमी भारत, विशेषकर गुजरात में प्रमुख रही है।

'कैलास महमेरु प्रासाद' शब्द मंदिर की संरचना को एक भव्य रूप में प्रस्तुत करता है, जो भगवान शिव के निवास कैलास पर्वत तथा हिन्दू ब्रह्मांडीय अवधारणा के मेरु पर्वत का प्रतीक है। यह ऊँचे, भव्य शिखर और सूक्ष्म शिल्पकारी पर विशेष बल देता है।

इसकी प्रमुख विशेषताओं में लगभग 50 मीटर ऊँचा शिखर (सोमनाथ में), विस्तृत नक्काशी, गर्भगृह, सभा मंडप (सभागार) और नृत्य मंडप शामिल हैं।

यह शैली गुजरात के पारंपरिक शिल्पकारों, जिन्हें सोम्पुरा सलाट कहा जाता है, की उत्कृष्ट कारीगरी को दर्शाती है।

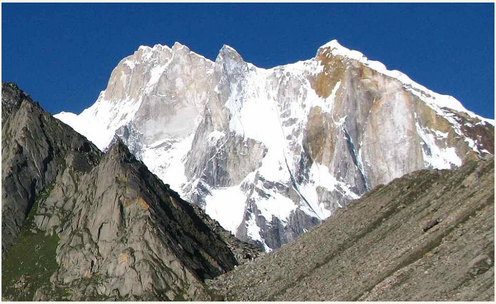

A True Copy.

No.RD/II-2-8(2)6441.

Subject:-Transfer of land to Somnath Trust from Bhalka Tank at Prabhas Patan.

77

GOVERNMENT OF SAURASHTRA
Revenue Department

-:O R D E R:-

Rajkot, 3rd/5 March, 1951.

Government is pleased to sanction the grant of 55 acres of land from Bhalka Talao in Prabhas Patan to the Somnath Trust, free of occupancy price, on payment of Rs.4/- per acre as assessment and water rate at Rs.4/- per acre for the area on which irrigated crop is raised.

2. Five acres of land from the Bhalka Talao area is to be reserved for public use, and before handing over the 55 acres of land to the Trust, the Special Officer, Prabhas Patan should urgently get demarcated this land in consultation with the Manager, Somnath Estates and two or three members of the public concerned.

3. The exemption from payment of occupancy price will be considered as a gift to the Trust.

Sd/-T.L.Shah
Secretary to Government of Saurashtra.

Copy to:-

1. The Chief Secretary, Saurashtra.
2. The Finance Department (consulted)
3. The Honorary Secretary, Somnath Board of Trustees, Jamnagar.
4. The Collector, Sorath with reference to his letter No.LND/1981 dated 4-1-1951.
5. The Special Officer, Somnath Land Acquisition Office, Prabhas Patan.
6. The Manager, Somnath Estates, Veraval.
7. The Director of Land Records.
8. The Personal Secretary to Hon'ble the Chief Minister.
9. The Registry Branch (2 copies)
10. Branch-R.D. V.

Sd/-Assistant Secretary to Government. Revenue Department.

~~1010~~ 108

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

अभिलेख
सोमनाथ पुनर्निर्माण

मई 1951 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी एक आधिकारिक संप्रेषण में सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण पर हुए व्यय से संबंधित एक संसदीय प्रश्न का उल्लेख किया गया है।

पुरातत्व विभाग ने स्पष्ट किया कि इस पुनर्निर्माण पर भारत सरकार द्वारा कोई व्यय नहीं किया गया। यह भी बताया गया कि पुनर्निर्माण की जिम्मेदारी सोमनाथ मंदिर ट्रस्ट की थी, जिसे ट्रस्ट द्वारा एकत्रित जनसहयोग से वित्तपोषित किया गया।

इस अभिलेख में यह भी उल्लेख है कि नवानगर के जाम साहब ट्रस्ट के अध्यक्ष थे, तथा आवश्यक होने पर वित्तीय विवरण ट्रस्ट के न्यासियों के बोर्ड से प्राप्त किए जा सकते थे।

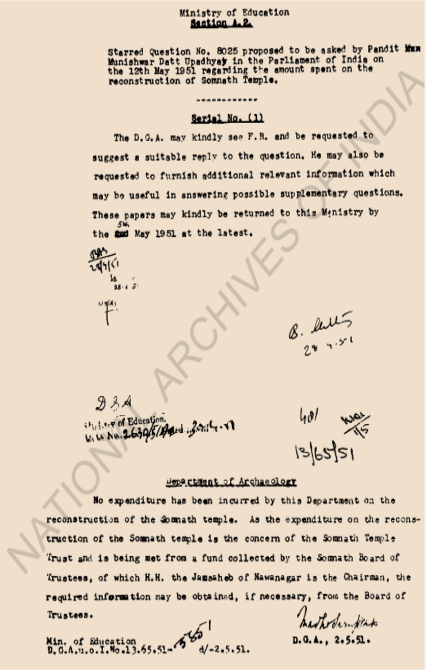

Ministry of Education
Section A.2.

Starred Question No. 8025 proposed to be asked by Pandit Munishwar Datt Upadhyay in the Parliament of India on the 12th May 1951 regarding the amount spent on the reconstruction of Somnath Temple.

Serial No. (1)

The D.G.A. may kindly see F.R. and be requested to suggest a suitable reply to the question. He may also be requested to furnish additional relevant information which may be useful in answering possible supplementary questions. These papers may kindly be returned to this Ministry by the 5th May 1951 at the latest.

D.G.A.
Ministry of Education
U.O. No. 2630/51

401
13/65/51

Department of Archaeology

No expenditure has been incurred by this Department on the reconstruction of the Somnath temple. As the expenditure on the reconstruction of the Somnath temple is the concern of the Somnath Temple Trust and is being met from a fund collected by the Somnath Board of Trustees, of which H.H. the Jamsaheb of Nawanagar is the Chairman, the required information may be obtained, if necessary, from the Board of Trustees.

D.G.A., 2.5.51.

Min. of Education
D.G.A.u.o.I.No.13.65.51- d/-2.5.51.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

सोमनाथ
प्राण प्रतिष्ठा समारोह 11 मई 1951

पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा 11 मई 1951 को सम्पन्न हुई, जिसे भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा सम्पन्न किया गया।

यह आयोजन प्रभास पाटन में मंदिर के पुनर्निर्माण की पूर्णता और उसे पुनः एक जीवंत पूजा केंद्र के रूप में स्थापित करने का प्रतीक बना।

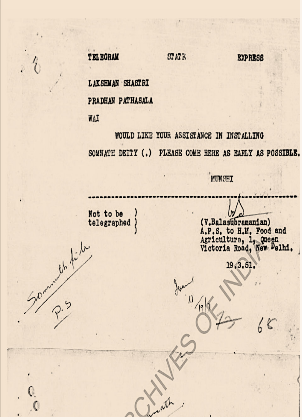

TELEGRAM STATE EXPRESS

LAKSHMAN SHASTRI
PRADHAN PATHASALA
WAI

WOULD LIKE YOUR ASSISTANCE IN INSTALLING SOMNATH DEITY (.) PLEASE COME HERE AS EARLY AS POSSIBLE.

MUNSHI

Not to be telegraphed

(V.Balasubramanian)
A.P.S. to H.M. Food and Agriculture, 1, Queen Victoria Road, New Delhi.
19.3.51.

ARCHIVES OF INDIA

ऐतिहासिक क्षण
सोमनाथ पुनर्निर्माण की गौरवगाथा

ऐतिहासिक क्षण
सोमनाथ पुनर्निर्माण की गौरवगाथा

बार-बार के आक्रमणों के बावजूद सोमनाथ आज भी अडिग खड़ा है। यह भारत माता के असंख्य वीर पुत्रों के स्वाभिमान और अदम्य साहस की गाथा है

- श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री

यह क्षण एक दिव्य संयोग का प्रतीक है। हम आज 75 वर्ष पूर्ण होने का उत्सव मना रहे हैं, जब सरदार वल्लभभाई पटेल के संकल्प से 1951 में वर्तमान सोमनाथ मंदिर का पुनर्स्थापन संभव हुआ।

साथ ही, हम उस प्रथम महान संघर्ष की 1000वीं वर्षगांठ के साक्षी हैं, जिसमे सोमनाथ की अस्मिता और आस्था को अमर बना दिया।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व हमारे गौरवशाली अतीत और पुर्नजागृत भविष्य के बीच एक सेतु है-एक ऐसा जन आंदोलन, जो वैश्विक मंच पर सनातन स्वाभिमान को सुदृढ़ करने का संकल्प लिए हुए है।

माननीय प्रधानमंत्री जी
का सोमनाथ के तट से विश्व को संदेश
विकसित भारत: हमारी अध्यात्मिक शक्ति ही हमारी नींव

“सोमनाथ भारत की आत्मा की शाश्वत घोषणा है। करोड़ों भारतवासियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी की वाणी एक स्पष्ट आह्वान है। यह स्वाभिमान पर्व कोई मात्र अनुष्ठान नहीं बल्कि एक दृष्टि है - विकसित भारत की वह रूपरेखा, जो अपनी जड़ों से शक्ति प्राप्त करती है। यह स्व (स्वयं) का पुनर्जागरण है- स्वाभिमान का जागरण है- जो हर भारतवासी को स्मरण करता है कि वह ऐसी सभ्यता का हिस्सा है, जो अपने वीरों को याद रखती है, जिसका ईश्वर कभी पराजित नहीं होता”